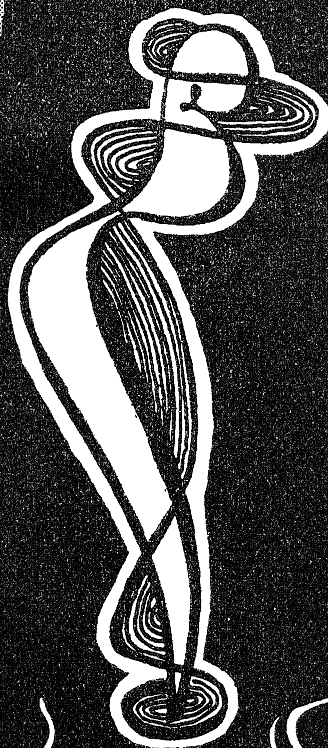
आस्था की दुधारें



श्रीबाल पांडे